समाजशास्त्र का उद्भव (Emergence of Sociology)

सोशियोलॉजी शब्द का हिंदी पर्यायवाची समाजशास्त्र है। सोशियोलॉजी (Sociology) शब्द की रचना अगस्त काम्ट ने लैटिन भाषा के शब्द सोशियस (socius)और ग्रीक भाषा के लागस (logos) शब्द से की। सोशियस शब्द का अंग्रेजी रूपांतरण society और logos शब्द का अंग्रेजी रूपांतरण logy है। Society का हिंदी रूपांतरण समाज है और logy शब्द का हिंदी रूपांतरण शास्त्र है अर्थात

समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान। इस प्रकार से सोशियोलॉजी का तात्पर्य है समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

समाजशास्त्र की उत्पत्ति का श्रेय फ्रांस के दार्शनिक अगस्त काम्ट को जाता है जिन्होंने 1838 में समाज के इस नवीन विज्ञान को समाजशास्त्र नाम दिया।

अगस्त काम्ट समाज से संबंधित अध्ययन को सर्वप्रथम सामाजिक भौतिकी Social Physics के नाम से पुकारा था

सर्वप्रथम अमेरिका के येलु विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के अध्ययन का कार्य प्रारंभ हुआ। भारत में सर्वप्रथम 1914 में मुंबई विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र का अध्ययन कार्य प्रारंभ हुआ।

1917 में कोलकाता विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विषय के साथ समाजशास्त्र का अध्ययन कार्य प्रारंभ हुआ।

1919 में ब्रिटिश समाजशास्त्री प्रोफेसर पैट्रिक गिड्स की अध्यक्षता में मुंबई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना हुई।

1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना हुई।

जान स्टुअर्ट मिल ने सोशियोलॉजी Sociology के स्थान पर इथोलोजी शब्द प्रयुक्त करने का सुझाव दिया और कहा सोशियोलॉजी दो भिन्न भाषाओं की अवैध संतान है।

समाजशास्त्र का जनक अगस्त काम्ट को माना जाता है जबकि इमाइल दुर्खीम को समाजशास्त्र का पिता कहा जाता है।

समाजशास्त्र का अर्थ समाज (सामाजिक संबंधों) का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन करने वाले विज्ञान से है।

समाजशास्त्र की परिभाषाओं को निम्नलिखित चार भागों में बांटा जा सकता है:-

(1) समाजशास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में
(2) समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के अध्ययन के रूप में
(3) समाजशास्त्र सामाजिक समूहों के अध्ययन के रूप में
(4) समाजशास्त्र सामाजिक अतः क्रियाओं के अध्ययन के रूप में

वार्ड के अनुसार ' समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है'।

गिडिंग्स के अनुसार 'समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है'।

ओडम के अनुसार ' समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज का अध्ययन करता है'।

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार 'समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के विषय में है। संबंधों के इसी जल को हम समाज कहते हैं।

क्यूबर के अनुसार 'समाजशास्त्र को मानव संबंधों के वैज्ञानिक ज्ञान के शाखा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है'।

मैक्स वेबर के अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों तथा कृतियों का अध्ययन है।

वान वीज के अनुसार सामाजिक संबंध ही समाजशास्त्र की विषय वस्तु का एकमात्र वास्तविक आधार है ।

आरनोल्ड. एम. रोज के अनुसार समाजशास्त्र मानव संबंधों का विज्ञान है।

जॉनसन के अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है सामाजिक समूह सामाजिक अतः क्रियाओं की ही एक व्यवस्था है।

गिलिन और गिलिन के अनुसार व्यापक अर्थ में समाजशास्त्र व्यक्तियों के एक दूसरे के संपर्क में आने के फल स्वरुप उत्पन्न होने वाली अतः क्रियाओं का अध्ययन कहा जा सकता है।

जिंसवर्ग के अनुसार समाजशास्त्र मानवीय अतः क्रियाओं और अंतः संबंधों की दशाओं और परिणाम का अध्ययन है।

जॉर्ज सीमेल के अनुसार समाजशास्त्र मानवीय अतः संबंधों के स्वरूपों का विज्ञान है
सोरोकिन के अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक सांस्कृतिक प्रघटनाओं के सामान्य स्वरूपों, प्रकारों और अनेक अंतर्संबंधों का सामान्य विज्ञान है।

इस प्रकार समाजशास्त्र संपूर्ण समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन करने वाला विज्ञान है। इसमें सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। सामाजिक संबंधों को ठीक से समझने की दृष्टि से सामाजिक क्रिया सामाजिक अंतः क्रिया एवं सामाजिक मूल्यों के अध्ययन पर इस शास्त्र में विशेष जोर दिया जाता है।

समाजशास्त्र की प्रकृति (Nature of Sociology)

समाजशास्त्र एक विज्ञान है क्योंकि इसमें वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है। अवलोकन विधि की सहायता से तथ्य एकत्रित किए जाते हैं। उन्हें व्यवस्थित और क्रमबद्ध किया जाता है। पक्षपात रहित होकर निष्कर्ष निकाले जाते हैं तथा सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है। समाजशास्त्र को विज्ञान मानने के कुछ प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं:-

1- समाजशास्त्र ज्ञान का आधार वैज्ञानिक पद्धति है- समाजशास्त्र तथ्यों के संकलन के लिए वैज्ञानिक पद्धति को काम में लेता है। मूर्त तथा अमूर्त सामाजिक तथ्यों के अध्ययन के लिए विभिन्न वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करता है। जैसे- समाजशास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने या तथ्य एकत्रित करने हेतु समाजमिति, अवलोकन पद्धति, अनुसूची तथा प्रश्नावली पद्धति, सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति, वैयक्तिक जीवन अध्ययन पद्धति, सांख्यिकीय पद्धति, साक्षात्कार पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति आदि का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं चरणों से गुजर कर समाजशास्त्रीय ज्ञान एवं सामाजिक तथ्य प्राप्त किए जाते हैं।

2- समाजशास्त्र में अवलोकन द्वारा तत्वों को एकत्रित किया जाता है:- समाजशास्त्र को विज्ञान मानने का एक अन्य आधार अनुसंधानकर्ता द्वारा तत्वों के संकलन हेतु प्रत्यक्ष निरीक्षक और अवलोकन करना है जिसमें समाजशास्त्र में काल्पनिक या दार्शनिक विचारों को कोई स्थान नहीं दिया जाता है।

3- समाजशास्त्र में तत्वों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है:- असंबद्ध या बिखरे हुए आंकड़ों या तथ्यों के आधार पर कोई वैज्ञानिक निष्कर्ष निकलना संभव नहीं है। सही निष्कर्ष निकालने के लिए आवश्यक है कि प्राप्त तथ्यों को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध किया जाए । इसके लिए तथ्यों को समानता के आधार पर विभिन्न वर्गों में बांटा जाता है। यह कार्य वर्गीकरण के अंतर्गत आता है।

4- समाजशास्त्र में 'क्या' है का उल्लेख किया जाता है:- समाजशास्त्र में वास्तविक घटनाओं की विवेचना की जाती है, यह शास्त्र इस बात पर विचार नहीं करता है कि क्या अच्छा है, क्या बुरा अथवा क्या होना चाहिए और क्या नहीं होना चाहिए। यह तो घटनाओं या तथ्यों का यथार्थ चित्रण करता है, जिस रूप में है उनका ठीक वैसा ही चित्रण करता है।

5- समाजशास्त्र में कार्यक्रम संबंधों की विवेचना की जाती है:-समाजशास्त्र क्या है का वर्णन करके ही संतुष्ट नहीं हो जाता है, इसमें तो घटनाओं, तथ्यों और विभिन्न समस्याओं के कार्य-कारण संबंधों को जानने का प्रयत्न किया जाता है। यह साथ तो किसी घटनाएं समस्या के पीछे छिपे कारणों की खोज करता है।

6- समाजशास्त्र में सिद्धांतों की स्थापना की जाती है:- समाजशास्त्र में कार्य-कारण संबंधों की विवेचना की जाती है। तथ्यों-घटनाओं के पारस्परिक संबंध ज्ञात किए जाते हैं। वर्गीकरण तथा विश्लेषण किया जाता है और तत्पश्चात सामान्य निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर ही समाजशास्त्रीय सिद्धांत या वैज्ञानिक नियम बनाए जाते हैं।

7- समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की पुनर्परीक्षा संभव है:- समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति की सहायता से तथ्य एकत्रित किए जाते हैं और इस पद्धति से प्राप्त तथ्यों की प्रमुख विशेषता यही है कि उनकी प्रामाणिकता की जांच की जा सकती है।

8- समाजशास्त्र के सिद्धांत सार्वभौमिक हैं:- समाजशास्त्र वैज्ञानिक पद्धति को काम में लेता हुआ जिन सिद्धांतों का उत्पादन करता है वह सार्वभौमिक प्रकृति के होते हैं।

9-समाजशास्त्र में भविष्यवाणी करने की क्षमता है:- समाजशास्त्र इस कारण भी विज्ञान माना जाता है कि यह क्या है के आधार पर क्या होगा बताने में अर्थात भविष्यवाणी करने में समर्थ है। अर्थात इस शास्त्र में अपने वर्तमान ज्ञान भंडार के आधार पर भविष्य की ओर संकेत करने की क्षमता है।

समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध कुछ आपत्तियां अर्थात समाजशास्त्र एक कला के रूप में है

कुछ विचारकों की मान्यता है कि प्राकृतिक विज्ञानों का लक्ष्य कारण-संबंधी व्याख्या प्रस्तुत करना है, जबकि सामाजिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विज्ञानों का लक्ष्य अर्थात अर्थ का निर्वचन (Interpretation) करना या उसे समझाना है। वह समाजशास्त्र को विज्ञान मानने से इनकार करते हैं इसकी वैज्ञानिक प्रकृति पर आपत्ति आपत्ति उठाते हैं जो इस प्रकार हैं:-

1- वैषयिकता (तटस्थता) का अभाव:- वैषयिकता या तटस्थता का अर्थ पक्षपात रहित अध्ययन से है। समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध एक तर्क यह दिया जाता है कि यह प्राकृतिक विज्ञानों के समान अपनी अध्ययन वस्तु का वास्तविकता के साथ अध्ययन नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि समाजशास्त्र जिस समाज,जाति, परिवार, धर्म, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक समस्याओं, सामाजिक मूल्य आदि का अध्ययन करता है वह स्वयं भी इनमें भागीदार होता है। वह इनका एक अंग होता है। अतः इन सबके वस्तुनिष्ठ अध्ययन में उसकी स्वयं की रुचि रुझान पूर्वाग्रह तथा व्यक्तिगत विचार बाधक हैं। इसी कारण समाजशास्त्र को एक विज्ञान नहीं माना जा सकता।

2- सामाजिक घटनाओं की जटिलता:- समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध एक आपत्ति यह उठाई जाती है कि समाजशास्त्र सामाजिक प्रघटनाओं का अध्ययन करता है जो काफी जटिल है, क्योंकि जटिल सामाजिक संबंधों और मानव व्यवहार का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करना बहुत कठिन है क्योंकि यह समय-समय पर बदलते रहते हैं।

3- सामाजिक घटनाओं की गतिशील प्रकृति:- समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध एक आपत्ति उठाई जाती है कि सामाजिक घटनाओं की प्रकृति गतिशील है अर्थात यह बदलती रहती है। अतः इनके आधार तथा उनके अध्ययन के आधार पर वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है।

4- सामाजिक घटनाओं में सार्वभौमिकता का अभाव:- सामाजिक घटनाओं में सार्वभौमिकता, एकरूपता या समानता का अभाव पाया जाता है तथा सामाजिक घटनाओं की कोई दो इकाइयां पूर्णता एक दूसरे के समान नहीं होती हैं। इसके विपरीत प्राकृतिक घटनाओं में सार्वभौमिकता पाई जाती है।

5- सामाजिक घटनाओं की माप में कठिनाई:- समाजशास्त्र को विज्ञान नहीं मानने वालों का कहना है कि सामाजिक घटनाओं की प्रकृति अमूर्त है, गुणात्मक है, अपनी इस प्रकृति के कारण ही सामाजिक घटनाओं को नापा तोला नहीं जा सकता।

6- कार्य कारण संबंध का अभाव:- समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध आपत्ति यह उठाई जाती है कि इसमें कार्य कारण संबंध का अभाव पाया जाता है।

7- समाजशास्त्र में प्रयोगशाला नहीं है:- समाजशास्त्र के वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध यह आरोप लगता है की भौतिक या प्राकृतिक विज्ञानों के समान इसके पास कोई प्रयोगशाला नहीं है, जिसमें नियंत्रित दिशाओं में अध्ययन किया जा सके। समाजशास्त्र द्वारा प्राप्त निष्कर्षों, अनुमानों पर आधारित होते हैं। इसी कारण समाज शास्त्र को विज्ञान नहीं माना जा सकता।

8- समाजशास्त्र भविष्यवाणी करने में असमर्थ है:- समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध यह आपत्ति उठाई जाती है कि यह भविष्यवाणी करने में असमर्थ है। इसके नियम सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है। यदि कोई भविष्यवाणी कर भी दी जाए तो उसका सत्य सिद्ध होना और भी कठिन है।

निष्कर्ष:-

_____समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध लगाए गए आरोप निराधार हैं। समाजशास्त्र एक विज्ञान है और उसकी प्रकृति वैज्ञानिक है इतना अवश्य है कि समाजशास्त्र उतना निश्चित विज्ञान नहीं है, जितने निश्चित प्राकृतिक या भौतिक विज्ञान है। इसी कारण समाजशास्त्र को व्यावहारिक विज्ञान नहीं मानकर एक विशुद्ध या सैद्धांतिक विज्ञान माना जाता है।

समाजशास्त्र एक परिप्रेक्ष्य के रूप में (Sociology As A Perspective)

परिप्रेक्ष्य शब्द से आशय दृष्टिकोण से है क्योंकि किसी भी घटना का अध्ययन करने को सभी सदस्यों को स्वयं का एक मुख्य दृष्टिकोण होता है स्वयं का दृष्टिकोण ही निश्चित करता है कि किसी घटना के वर्णन में किस तत्व पर अधिक बल दिया जाएगा तथा किन तथ्यों को त्याग दिया जाएगा। अतः अध्ययन के दृष्टिकोण के आधार पर ही किसी विषय की परिधि सीमाओं का निर्धारण होता है।

गुड़े एवं हॉट के अनुसार, पूरी घटना स्थित या वस्तु को भिन्न-भिन्न प्रकार से अध्ययन किया जा सकता है। किसी भी विषय या विज्ञान की परिभाषा अध्ययन का क्षेत्र, प्रकृति सिद्धांत एवं अवधारणा इत्यादि इसके परिप्रेक्ष्य निर्धारित करती है। प्रत्येक विज्ञान में घटना के सभी पक्षों पर ध्यान केंद्रित न करके मात्र एक पक्ष पर ध्यान दिया जाता है। समाजशास्त्र आरंभ में जिन नवीन विचारों पर आधारित था, उसी को हम समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य कहते हैं, जिन विचारों ने समाजशास्त्र की उत्पत्ति की नींव रखी थी उनके विचारों का संक्षेप में वर्णन किया गया है-

अगस्त काम्ट

अगस्त काम्ट को समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है, क्योंकि सर्वप्रथम काम्ट ने ही सोशियोलॉजी शब्द की रचना की थी। काम्ट ने एक व्यवस्थित विज्ञान के रूप में इस विषय की नींव 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध अर्थात 1838 में रखी थी।

अगस्त काम्ट के अनुसार सामाजिक विषयों एवं तथ्यों को विज्ञान के नियमों से संबंधित कर स्पष्ट किया जाना चाहिए। उन्होंने इसी आधार पर समाजशास्त्र को दो रूपों में बांटा है:-

1- सामाजिक स्थैतिकी- इसके अंतर्गत सामाजिक घटना का रूप स्थाई होता है जो समाज की व्यवस्था से संबंधित है उनके अनुसार समाज की व्यवस्था व स्थायित्व उसका स्थाई स्वरूप है।

2- सामाजिक गत्यात्मकता - समाज में गत्यात्मकता शब्द समाज के विकास से जुड़ा हुआ है। किस प्रकार समाज में विभिन्न संस्थाएं विकसित होती हैं तथा समय के अनुसार उनमें किस प्रकार परिवर्तन होता है। इन सभी का संबंध सामाजिक गत्यात्मकता से होता है।

हरबर्ट स्पेंसर Herbert Spencer

___

इमाइल दुर्खीम (Emile Durkheim

कार्ल मार्क्स (Karl Marx

मैक्स वेबर (Max Weber

समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि / नवचिन्तन/कल्पना के आधार (Sociological Imagination

समाजशास्त्र एक मानविकी विधा के रूप में (Sociology As A Humanistic Discipline